❀ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ❀

॥ श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

# ❀ श्रीनिम्बार्क वन्दना ❀

श्रीचक्रसुदर्शनावतार आद्याचार्य जगद्गुरु
भगवान् श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्र

**श्रीमते सर्वविद्यानां प्रभवाय सुब्रह्मणे ।**
**आचार्य्याय मुनीन्द्राय निम्बार्काय नमो नमः ॥**

सम्पादक : पं० गोविन्ददास 'सन्त' धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ

## ❀ प्राक्कथन ❀

"श्रीनिम्बार्क वन्दना" नामक ३१ वाँ पुष्प प्रकाशित होकर भगवद्भक्तों के कर कमलों में प्रस्तुत है। इस पुष्प को श्रीजी की बड़ी कुञ्ज, बृन्दावन के प्रधान पुजारी श्री मदनमोहनशरण जी ने भक्तजनों के हितार्थ अपने द्रव्य से प्रकाशित कर श्रीनिम्बार्क साहित्य की अनुपम सेवा की है। पुजारीजी ने बचपन से आज तक मन्दिर में निवास कर हृदय से ठाकुर आनन्द मनोहरजी की सेवा में निरन्तर संलग्न रहते हैं। आपका जन्म महाराष्ट्र प्रान्त के खामगाँव ( बुलढ़ाना ) में हुआ।

बाल्यकाल से आपने ज० नि० श्री श्रीजी महाराज अ० भा० नि० पीठ श्रीनिम्बार्क तीर्थ, सलेमाबाद से वैष्णव दीक्षा प्राप्त की है। श्रीचरणों में आपकी अगाध निष्ठा है। ग्रन्थ प्रकाशन में आगे भी कई पुस्तकों को छपवाने का संकल्प कर रखा है।

भगवान् आपकी इस प्रकार की प्रवृत्ति निरन्तर इसी प्रकार बनाये रखे, यह मैं हृदय से कामना करता हूँ।

भक्तजनों से प्रेमपूर्वक अनुरोध है कि इस पुष्प को नित्य पाठ में लेकर इसका सदुपयोग करेंगे तो हम प्रकाशन के परिश्रम को सफल समझेंगे।

शुभैषी—

अधिक मास एकादशी — रसिकमोहनशरण शास्त्री

सं० २०५६ — प्रबन्धक

श्रीजी मन्दिर, बृन्दावन

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

॥ श्रीनिम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

# ॥ श्रीनिम्बार्क वन्दना ॥


सम्पादक :

पं० गोविन्ददास 'सन्त'

धर्मशास्त्री, पुराणतीर्थ


卐
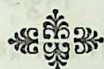

प्रकाशक :

मदनमोहनशरण, पुजारी

श्रीजी मन्दिर, रेतिया बाजार, वृन्दावन

卐

प्रतियाँ १००० | अधिक मास एकादशी सं० २०५६ | मूल्य : आचार्यचरण निष्ठा

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री 'श्रीजी'
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज प्रणीतं

# * श्रीनिम्बार्कमहिमाष्टकम् *

राधामुकुन्दाऽङ्घ्रिसरोजभृङ्गं भक्तेष्टवाञ्छातरुमाप्तसेव्यम् ।
नवाम्बुदश्यामलमञ्जुलाङ्गं निम्बार्कमाचार्यमनुस्मरामि ॥१॥

आचार्यवर्य्यं हरिचक्रराजं भवाऽब्धिसेतुं भयमुक्तिहेतुम् ।
गिरीन्द्रगोवर्द्धनराजमानं निम्बार्कदेवं हृदि भावयामि ॥२॥

सुमन्दमेधारतिदानशीलं निकुञ्जकुञ्जान्तरनित्यवासम् ।
श्रीकृष्णलीलारसपानमत्तं निम्बार्क-देवं मनसा स्मरामि ॥३॥

पाखण्डकण्डूशमनप्रवीणं श्रुत्यर्थ-सम्यक्पथबोधशीलम् ।
गोविन्द-भक्त्या-रसवृष्टिकारमाचार्यनिम्बार्कमिहस्मरामि ॥४॥

अनन्तकारुण्यगुणैकधाम प्रशान्तचित्तं प्रचुरप्रभावम् ।
प्रेमातिसान्द्रं परिपूर्णकामं निम्बार्कमीडे रससन्निधानम् ॥५॥

वेदान्त-गीताकृतदिव्यभाष्यं स्वाभाविकं भिन्नमभिन्नरूपम् ।
संस्थापितं वै निजवादमाद्यं तं निम्बभानुं शिरसा नमामि ॥६॥

सर्वेश्वराराधनदत्तचेतः देवर्षिवर्य्येण च लब्धदीक्षः ।
श्रीधामवृन्दावनकुञ्जसेवी निम्बार्कवर्य्यो खलु मे गतिः स्यात् ॥७॥

यतिस्वरूपाय पितामहाय व्यालोकितो निम्बतरौ दिनेशः ।
तं भानुकोटिप्रभमाशुरेव निम्बार्कमन्तः सततं स्मरामि ॥८॥

स्तोत्रं पुण्यकरं चारु निम्बार्कमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराख्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥९॥

❀ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ❀

॥ श्रीमते निम्बार्कमहामुनीन्द्राय नमः ॥

# ❀ निम्बार्क वन्दना ❀

नमो नमो चक्रावतार प्रभु,
श्रीनिम्बार्क देव भगवान् ॥टेर॥

[ १ ]

हंसावतार श्रीसनकादिक प्रभु, श्रीनारद मुनि कृपा निधान।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ॥
द्वापर युग के अन्त समय में, धर्म का ह्रास हुआ सर्वत्र।
ऋषि मुनि वैष्णव भक्तजनों ने, नीम सार में हो एकत्र ॥
करी तपस्या सबने मिलकर, धर कर मन में प्रभु का ध्यान।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ॥१॥

[ २ ]

सर्वेश्वर श्रीकृष्णचन्द्रजी, हो प्रसन्न तप से तत्काल।
जो हैं भक्तजनों के रक्षक, शरणागत जन के प्रतिपाल ॥
निज आयुध श्रीचक्रराज को, दिया प्रभु ने यों आदेश।
लो अवतार आप अब जाकर, भूमण्डल में दक्षिण देश ॥
शिरोधार्य कर प्रभु की आज्ञा, कोटि-सूर्य सम तेज महान।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ॥२॥

[ ३ ]

कार्तिक शुक्ला पूनम के दिन, मेष लग्न में सायंकाल ।
प्रकट भये श्रीअरुणाश्रम में, तट गोदावरी परम विशाल ।।
अरुणकुमार जयन्ती नन्दन, नाम सुखद श्री नियमानन्द ।
भये प्रकट सब जग को देने, भक्तिमार्ग से परमानन्द ।।
बाल्यकाल में मात-पिता संग, व्रजमण्डल में कर प्रस्थान ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ।।३।।

[ ४ ]

पितृ चरण से सब शास्त्रों की, लेकर पूरणतम शिक्षा ।
देव ऋषि श्री नारदजी से, वैष्णव पञ्चपदी दीक्षा ।।
नैष्ठिक ब्रह्मचर्य्य व्रत पालन, करके आजीवन स्वीकार ।
टीका कर प्रस्थान त्रयी पर, वैष्णव धर्म प्रचार प्रसार ।।
किया आपने जग को देकर, भक्ति मार्ग का उत्तम ज्ञान ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ।।४।।

[ ५ ]

एक बार श्रीब्रह्मदेव भी, अपने मन में कर सुविचार ।
आये लेन परीक्षा आश्रम, सुन्दर रूप यति का धार ।।
रात में भोजन नहीं करेंगे, लख कर उनका यह आग्रह ।
स्थापित कर तब निम्ब वृक्ष पर, चक्रराज का श्रीविग्रह ।।
विस्मित करने ब्रह्मदेव को, सूर्य रूप में प्रकटे आन ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क भगवान् ।।५।।

[ ६ ]

निम्ब-वृक्ष पर आज आपने, दिखलाया है मुझको अर्क ।
होगा प्रसिद्ध सब जग में अबसे, नाम आपका 'श्रीनिम्बार्क ।।
द्वैत और अद्वैत वेद मत, उभय पक्ष शास्त्रानुकूल ।
फिर कौन पक्ष को अपना माने, कहकर दूजे को प्रतिकूल ।।
स्वाभाविक द्वैताद्वैत मानकर, किया वेद पूरन सम्मान ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ।।६।।

[ ७ ]

एक समय श्री यमुना तट पर, स्नान काल में कर उपकार ।
शाप-ग्रसित श्रीमुनि पतङ्ग का, कच्छप योनि से उद्धार ।।
इसी तरह एक भक्तराज की, नौका डूब रही मझधार ।
पार लगाई उसको भगवन्, सुनकर उसकी करुण पुकार ।।
जय जय जय गुरुदेव! दयानिधि, कहँ लग वरणौं तव गुणगान।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ।।७।।

[ ८ ]

एक बार बहु दल-बल संग ले, शास्त्रार्थ करन जय प्राप्ति काज ।
आया जहाँ पर आप विराजे, इक अभिमानी पण्डित राज ।।
उसी समय गूलर फल गिरकर, किया आपका चरण स्पर्श ।
प्रकटे उससे मुनि औदुम्बर, देख आपका यह उत्कर्ष ।।
भूला वह विद्वत्ता अपनी, हुआ नष्ट उसका अभिमान ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ।।८।।

[ ६ ]

चरण कमल में पड़कर उसने, क्षमा कराई अपनी भूल ।
यह शुभ समय तभी आ पाता, हों सर्वेश्वर जब अनुकूल ॥
इस भाँति शुभचरित आपके, हैं बढ़ कर एक से एक ।
जो वर्णन हो सके सभी का, इतना कहाँ है बुद्धि विवेक ॥
'सन्त' सदा भज राधा माधव, श्रीसर्वेश्वर दया निधान ।
नमो नमो चक्रावतार प्रभु, श्रीनिम्बार्क देव भगवान ॥६॥

❀×❀

## ❀ निम्बार्क-विनय ❀

पल पल छिन छिन जात उमर यह भाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ॥टेर॥

[ १ ]

जब आयो द्वापर अन्त असुर बहु छाये ।
लख उनका अत्याचार भक्त घबराये ॥
ऋषि मुनि वैष्णव साधु सभी बतराये ।
कर विचार भक्त सब विष्णु क्षेत्र में आये ॥
तप करने को वहाँ बैठे ध्यान लगाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ॥१॥

[ २ ]

तप के प्रभाव हो चिन्तित मन भगवाना ।
निज आयुध से यों कहा सुनो धर ध्याना ॥

हे कोटि सूर्य सम तेज महा बलवाना ।
तुम अज्ञानी जनों को ज्ञान मार्ग बतलाना ।।
भू-मण्डल में अवतार लेहु अब जाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।२।।

[ ३ ]

प्रभु आज्ञानुसार हो प्रकट देश दक्षिण में ।
गोदावरी तट पर ऋषि अरुण आश्रम में ।।
हो गया और से और दृश्य वहाँ क्षण में ।
उस कार्तिक शुक्ला पूनम के शुभ दिन में ।।
भई मात जयन्ती पिता अरुण मुनिराई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।३।।

[ ४ ]

एक दिवस ऋषि नारद ने वहाँ आकर ।
शिष्य किया नियमानन्द को मन्त्र सुनाकर ।।
कल्याण करो सब जीवमात्र का फिर कर ।
तुम सदा सर्वदा ब्रह्मचर्य में रहकर ।।
फिर सिद्धान्तवाद की क्रिया सभी बतलाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।४।।

[ ५ ]

हरि इच्छानुसार हो प्रकट असुर संहारे ।
आत्मीय साधु सब वैष्णव भक्त उबारे ।।

जय हो नियमानन्द अरुण मुनि प्यारे ।
नास्तिक मुख मर्दन करन हेतु पग धारे ।।
वैदिक सतसम्प्रदाय प्रवर्तक मुनि कहाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।५।।

[ ६ ]

ब्रह्मा भी सुन कीर्ति ब्रह्म लोक से आये ।
धर यति का रूप विपक्षी बन बतराये ।।
जब नियमानन्द ने नीम में रवि दिखलाये ।
तब लख कर उनका तेज विधी हर्षाये ।।
तब नियमानन्द से निम्बार्क नाम धराई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।६।।

[ ७ ]

जय हो कृपालू हरि आयुध चक्र सुदर्शन ।
तुम हो दयानिधान भक्त दुःख भञ्जन ।।
सुन करके निज भक्तन की करुणा क्रन्दन ।
भारत में फिर बन आओ जयन्ती नन्दन ।।
'सन्त' सदा भज राधा माधव चित्तलाई ।
भज निम्बारक दिन रैन सदा सुखदाई ।।७।।

[ १ ]

मंगल मूरति नियमानन्द ।

मंगल युगल किशोर हंस वपु, श्री सनकादिक आनन्दकन्द ।।

मंगल श्री नारद मुनि मुनिवर, मंगल निम्ब दिवाकर चन्द ।

मंगल श्री ललितादि सखीजन, हंस वंश सन्तन के वृन्द ।।

मंगल श्री वृन्दावन जमुना, तट वंशीवट निकट अनन्द ।

मंगल नाम जपत 'जय श्रीभट' कटत अनेक जनम के फन्द ।।

[ २ ]

श्रीनिम्बार्क दीनबन्धु सुन पुकार मेरी ।

पतितन में पतित नाथ ! शरण आयो तेरी ।।

तात मात भगिनि भ्रात, परिजन समुदाई ।

सबही सम्बन्ध त्यागि आयो, शरणाई ।।

काम, क्रोध, लोभ, मोह, दावानल भारी ।

निशिदिन हौं जरों नाथ, लीजिये उबारी ।।

अम्बरीष भक्त जानि, रक्षा करि धाई ।

तैसे हि निज दास जानि, राखो शरणाई ।।

भक्त वत्सल नाम नाथ, वेदनि में गायो ।

'श्रीभट' तव चरण परसि, अभय दान पायो ।।

[ ३ ]

नमो नमो निम्बारक स्वामी ।

नमो नमो जय श्रीवृन्दावन, सब धामन के हो तुम धामी ।।

नमो नमो जय श्रीराधामाधव, सब देवन के अन्तरयामी ।

'कृष्णदास' अभिराम श्याम भज, नमो नमो सब पूरणकामी ।।

## ।❀। श्रीनिम्बार्क भगवान् की आरती ।❀।

आरती निम्बभानु की कीजे ।
तन-मन-धन न्योछावर कीजे ॥

अरुण कुमार जयन्ती नन्दन,
प्रकट भये श्री चक्र-सुदर्शन ।
सेवत पाप पुञ्ज सब छीजे,
आरती निम्बभानु की कीजे ॥१॥

नख शिख सुन्दर शोभा जिनकी,
रूप माधुरी अनुपम तिनकी ।
निरख-निरख छवि आनन्द लीजे,
आरती निम्बभानु की कीजे ॥२॥

'सन्त' सदा यह आरती गावे,
वे जन निश्चय भव तर जावे ।
जीवन सफल आपनो कीजे,
आरती निम्बभानु की कीजे ॥३॥

"सन्त"

❀★❀

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
**श्रीजी मन्दिर**
**प्रताप बाजार, वृन्दावन उ०प्र०**

मुद्रक : श्रीसर्वेश्वर प्रेस, प्रताप बाजार, वृन्दावन